मंत्रि-परिषद में अविश्वास का प्रस्ताव—जारी
MOTION OF NO-CONFIDENCE IN THE COUNCIL OF MINISTERS—Contd.

प्रधान मंत्री, अणु-शक्ति मंत्री तथा योजना मंत्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी) : काफी समय के बाद किन्हीं विशेष बातों को लेकर यहां पर अविश्वास प्रस्ताव पेश किया गया है। सबसे पहले मैं उनको बधाई देना चाहती हूं, जो इन चुनावों में सफल हुए हैं। हम यह अवश्य चाहते थे कि कांग्रेस की जीत हो, परन्तु हमें जनता का निर्णय मंजूर है। इस सभा में तथा विधान सभाओं में जो लोग चुन कर आये है उन्हें यह महसूस नहीं करना चाहिये कि हम उनकी उपस्थिति पर खुश नहीं हैं। इसके विपरीत हम उनका स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि वे इस सभा तथा विभिन्न विधान सभाओं की कार्यवाही में मूल्यवान योगदान देंगे।

श्री वाजपेयी ने कहा कि मैंने चुनावों के दौरान उनके दल को गालियां दी हैं। मुझे खुशी है कि उन्होंने इस बारे में सही दृष्टिकोण अपनाया है अर्थात् "हम गालियों का बुरा नहीं मानते।" मैं यह स्पष्ट करना चाहती हूं कि मैंने उनके दल या किसी अन्य दल को गालियां नहीं दीं। हां, मैंने उनके दल तथा अन्य दलों की कुछ बातों के बारे में, जो मेरे विचार में राष्ट्रीय हित में नहीं हैं, कड़े शब्द अवश्य ही कहे थे। और वह है साम्प्रदायिकता। इसके बारे में मैं बाद में कहूंगी।

श्री दाण्डेकर के विरुद्ध मुझे कुछ नहीं कहना है क्योंकि उन्होंने इंगलैण्ड के एक ऐसे समाचार-पत्र अर्थात् "डेली एक्सप्रेस" से उद्धरण दिया है जो स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व तथा उसके बाद भी बराबर भारत-विरोधी दृष्टिकोण अपनाता रहा है।

इस प्रस्ताव के प्रस्तावक महोदय का मुख्य प्रश्न 'सेनाओं' के बारे में था। चुनावों के दौरान मैंने अपने भाषणों में कुछ दलों के साम्प्रदायिक पहलू की ही निन्दा नहीं की थी अपितु जातिवाद, क्षेत्रवाद या संकीर्णता को बढ़ावा देने वाले रवैये की कटु आलोचना की थी। किसी भी भारतीय को चाहे वह भारत के किसी भी हिस्से में रहता हो यह महसूस नहीं होना चाहिए कि उसको किसी अन्य नागरिक के बराबर अधिकार नहीं हैं। चाहे वह भारत के किसी भी हिस्से में रहना चाहे उसे यह स्वतंत्रता होनी चाहिए। बम्बई, तेलंगाना तथा भारत के अन्य हिस्सों में हाल में जो कुछ हुआ है वह बहुत निन्दनीय है और उसका समर्थन नहीं किया जा सकता। मैंने शिव सेना तथा ऐसी अन्य सेनाओं की विभिन्न अवसरों पर निन्दा की है। मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि ऐसे आन्दोलन देश के विकास, प्रगति तथा एकता के लिए भारी खतरा है।

कल गृह-मंत्री ने इन अनुचित आरोपों का विस्तार से खण्डन किया था कि इस मामले में राज्य सरकार या केन्द्रीय सरकार ने चुप्पी साध रखी है या कोताही की है। हमेशा यह फैसला करना आसान नहीं है कि कब कार्यवाही की जानी चाहिए। हमारी कठिनाई यह है कि यदि पहले से ही कोई कार्यवाही की जाये तो माननीय सदस्य कहेंगे कि ऐसा करने का औचित्य क्या था। परन्तु मैं यह स्पष्ट कर देना चाहती हूं कि हमने इस मामले को समाप्त हुआ नहीं समझा है। हमें

अब यह विचार करना है कि इससे कैसे निपटा जाये। परन्तु यह एक ऐसा मामला है जिससे सरकार अकेली नहीं निपट सकती। यह एक ऐसा मामला है जिसमें हम सबको अपने दिलों को टटोलना चाहिए। आज जबकि कई राज्यों में गैर-कांग्रेसी सरकारें बनी हुई हैं, प्रत्येक दल का योगदान महत्वपूर्ण हो गया है। प्रश्न यह नहीं है कि कौन सत्तारूढ़ है। प्रश्न इस बात का है कि जो हल निकाला गया है उसके प्रति लोगों का दृष्टिकोण क्या है। क्योंकि जब कोई दल स्थिति का अनुचित लाभ उठाना चाहता है, तो दल चाहे कितना ही अच्छा हो वह स्थायी दल नहीं हो सकता। इससे नई समस्याएं ही उत्पन्न होती हैं।

मुझे खेद हैं कि इस आन्दोलन के साथ शिवाजी का नाम जोड़ा जा रहा है। शिवाजी केवल महाराष्ट्र के ही नहीं अपितु सारे राष्ट्र के नेता थे। इसी तरह आसाम के सरदार लचित भी देश के एक महान व्यक्ति थे। इसलिए उनका नाम देश के किसी छोटे से भाग के साथ जोड़ना दुर्भाग्यपूर्ण है। बम्बई में सब सम्प्रदायों के व्यक्ति रहते हैं। देश के विभिन्न भागों से आकर लोग वहां बस गये है और उन्होंने अपना धन तथा योग्यता इस नगर की समृद्धि में लगाया है। यदि किसी को ऐसे बड़े नगरों से दूर रखने के लिये कोई आन्दोलन चलाया जाता है तो उससे उन नगरों को ही हानि होगी।

हमें यह याद रखना चाहिए कि पुलिस वाले भारतीय है, वे कोई विदेशी नहीं है। उनमें से अधिकतर गरीब परिवारों से होते हैं। इसलिए हम सबको इस तरह का वातावरण पैदा करने में सहायता करनी चाहिए जिससे वे अधिक मित्रतापूर्ण रवैया अपना सकें। उनके रवैये में पहले ही काफी परिवर्तन आ गया है। उन्हें कानून और व्यवस्था कायम रखने के साथ लोगों की सहायता करने का भी बराबर प्रशिक्षण दिया जाता है।

श्री म० ला० सोंधी (नई दिल्ली) : इन्द्रप्रस्थ भवन में पुलिस ने जो कुछ किया, क्या उससे आप संतुष्ट हैं ?

श्रीमती इन्दिरा गांधी : जी, नहीं। इस बारे में हमने सभा में काफी कुछ कहा है। ऐसा कई अवसरों पर हुआ हैं।

श्री नाथपाई बड़े दयाद्र भाव से बोले हैं और मैं उससे बहुत प्रभावित हुई हूं। मैं उनसे पूर्णतया सहमत हूं। मैं किसी पर दोषारोपण नहीं करना चाहती क्योंकि संकीर्ण विचारधारा वाले तत्व हम सब में मौजूद है। कुछ दल समझते हैं कि केवल कुछ लोग ही आदमी हैं और शेष आदमी नहीं हैं। देश में अब भी बहुत से लोग साम्प्रदायिक भावना, जातिवाद, क्षेत्रवाद आदि के शिकार हो जाते हैं। मैंने चुनावों के दौरान, इस सभा में या अन्य कहीं पर भी यह नहीं कहा है कि कांग्रेस में कोई दोष नहीं है। परन्तु हम शुरू से ही इन विघटनकारी प्रवृत्तियों का मुकाबला करने के लिए संयुक्त प्रयास करते रहे है। ऐसी प्रवृत्तियों को बढ़ावा देने की बजाय उन्हें राष्ट्र को मजबूत बनाने में लगाया जाना जाहिये।

श्री रंगा (श्रीकाकुलम) : सिद्धान्तों का बखान करने की बजाय उन्हें बताना चाहिए कि सरकार कानून तथा व्यवस्था बनाए रखने के लिये क्या कार्यवाही कर रही है ?

श्रीमती इन्दिरा गांधी : सरकार ने बहुत सी चीजें की हैं। जब भी कोई घटना घटी है गृह-मंत्री या अन्य सम्बधित मंत्री ने उस पर विस्तार से प्रकाश डाला है और प्रत्येक सदस्य को अपने विचार व्यक्त करने का अवसर दिया गया है। मैं इस समय इन बातों के विस्तार में नहीं जाना चाहती। हम सबको इसे राष्ट्रीय समस्या मानकर इसका हल ढूंढ़ने में सहयोग देना चाहिये।

मैं महाराष्ट्र तथा आंध्र प्रदेश के मुख्य मंत्रियों से बराबर सम्पर्क बनाए हुए हूं और वहां जो कुछ हो रहा है, उसका पता लगाती रही हूं। वे सभी कदम उठा रहे है। बहुतसी समस्याएं अभी हल की जानी हैं। मैं यह नहीं कहती कि सब समस्याएं हल हो गई हैं। कोई भी हल सबको मान्य नहीं हो सकता इसलिए हमें सबके सहयोग की आवश्यकता है।

Shri Madhu Limaye (Monghyr) : First cooperate with us. No new house need be constructed for the Prime Minister. Crores of people are homeless in this country.

अध्यक्ष महोदय : उन्हें अपना भाषण देने दिया जाये। माननीय सदस्य उन्हें बीच-बीच में इस तरह नहीं रोक सकते।

श्रीमती इन्दिरा गांधी : मैं ऐसे प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहती थी। माननीय सदस्यों को पता है कि मैं एक काफी छोटे मकान में प्रशन्नता से रह रही हूं। परन्तु मैं नहीं समझती कि वह प्रधान मंत्री के स्थायी निवास-स्थान का काम दे सकता है। क्योंकि प्रधान मंत्री से जो लोग मिलने आते है, उन्हें उस छोटे से मकान में बड़ी असुविधा होती है। मैं बड़े आदमियों की बात नहीं कह रही हूं। बहुत से संसद् सदस्यों ने मुझसे इस बारे में शिकायत की है। प्रस्ताव कोई बड़ा मकान बनाने का नहीं है। ऐसा मकान बनाने का प्रस्ताव है जो इस महान देश के प्रधान मंत्री के कर्त्तव्यों को पूरा करने के लिये काफी हो।

श्री बलराज मधोक (दक्षिण दिल्ली) : क्या हम यह समझें कि जब भी नया प्रधान मंत्री आयेगा, उसके लिये नया निवास-स्थान बनाया जायेगा जैसाकि अब तक हमारा अनुभव रहा है ?

श्रीमती इन्दिरा गांधी : माननीय सदस्य ने मेरी बात सम्भवतः सुनी नहीं है। मैंने स्थायी निवास-स्थान की बात कही है।

मध्यावधि चुनावों के बारे में काफी कुछ कहा गया है। गैर-कांग्रेसी दल अपनी जीत पर बहुत उत्साहित हैं क्योंकि उनके लिए यह एक अप्रत्याशित चीज है। हमें भी अपनी हार पर काफी हैरानी हुई है। अब लोकतंत्र के महत्व को समझने का समय आ गया है। हमें जीत कर आने वालों का स्वागत करना तथा हारने वालों के साथ सहानुभूति प्रकट करनी चाहिए।

मेरा निवेदन यह है कि चाहे स्वतंत्र दल अथवा जनसंघ का कोई सदस्य माने अथवा न माने परन्तु देश की आर्थिक स्थिति में बहुत सुधार हुआ हैं। मेरा आगे निवेदन यह हैं कि यह सुधार भी लोगों द्वारा बहुत कष्ट सहने के बाद हुआ है। इसमें सन्देह नहीं कि देश में बहुत गरीबी है परन्तु इसके साथ ही ऐसी बहुत सी चीजें देखने में आ रही हैं जिनसे यह प्रतीत होता है कि देश में काफी सुधार हुआ हैं। अब हमें यह देखना है कि यह सुधार कैसे हुआ है। मैं समझती हूं कि यह सुधार देश में लोकतंत्र होने के कारण हुआ है। लोगों को हर किस्म की आजादी है। इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि लोगों को नई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। उन्हें अब विज्ञान और प्रौद्योगिकी की सुविधाएं चाहिये। मैं समझती हूं कि यह हमारी सफलता है कि लोग पुरानी चीजें भूल रहे हैं और नई समस्याओं का सामना कर रहे हैं। इन समस्याओं का सामना करते-करते वे बहुत सी नई चीजों का पता लगा सकेंगे।

मैं इस बात से इन्कार नहीं करती कि हमारे देश में प्रादेशिक विषमतायें नहीं हैं। हमें यह भी पता है कि प्रत्येक राज्य में कई ऐसे क्षेत्र होते हैं जो आर्थिक दृष्टि में पिछड़े होते हैं और उनमें बहुत सुधार करने की आवश्यकता होती हैं। हम अपनी योजनाओं में हर सम्भव प्रयत्न कर रहे हैं कि उनमें बहुत सुधार किया जाये। परन्तु ऐसा सुधार शीघ्र ही नहीं किया जा सकता क्योंकि यह समस्या बहुत जटिल हैं।

श्री जार्ज फरनेन्डीज ने निरक्षरता के बारे में कुछ टिप्पणी की थी। तत्सम्बन्धी आंकड़े देखने से पता चलता है कि उस दिशा में बहुत सुधार हुआ है। अतः हमें हमेशा यह नहीं कहते रहना चाहिये कि कोई सुधार नहीं हुआ है।

अब संयुक्त मोर्चा सरकारों के सम्बन्ध में मैं कुछ कहना चाहूंगी। मैं चाहती हूं कि वे एकता बनाये रखें। चूंकि अब उनकी संख्या में वृद्धि हो गई है इसलिये उन्हें अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने का प्रयत्न करना चाहिये। जहां तक केन्द्रीय सरकार का सम्बन्ध है हम उन्हें पूरा सहयोग देते हैं। मैं एक बात और बता देना चाहती हूं कि केवल गैर-कांग्रेसी सरकारें ही नहीं बल्कि कांग्रेसी सरकारें भी यह महसूस करती हैं कि हम उनके साथ उचित व्यवहार नहीं करते हैं। परन्तु यह बात हमारे वश की नहीं है। हमारे साधन ही इतने सीमित हैं कि हम सबको खुश नहीं कर सकते। फिर भी हम हर सम्भव कार्यवाही करने के लिये तैयार है। हम उन्हें पूरा-पूरा सहयोग देने को तैयार हैं परन्तु हमें भी तो उनके सहयोग की आवश्यकता हैं। इसलिये हम सबको बैठकर यह सोचना चाहिये कि हम एक दूसरे को कैसे सहयोग दे सकते हैं। परन्तु यदि भिन्न-भिन्न दल भिन्न-भिन्न बातों पर जोर देते रहे, तो भिन्न-भिन्न राज्यों को इकट्ठा रखना सम्भव नहीं होगा।

जहां तक चुनावों का सम्बन्ध है, लोग उनके बारे में भिन्न-भिन्न अनुमान लगा रहे थे। एक बार तो चुनावों का बहिष्कार करने का ही प्रयत्न किया गया था। परन्तु चुनावों में अनेक लोगों ने भाग लिया और लगभग एक लाख में से केवल 28 मतदान केन्द्रों में पुनः निर्वाचन

कराना आवश्यक समझा गया। हमें इन परिणामों से संतुष्ट हीं जाना चाहिये। जहां तक चुनावों में भ्रष्टाचार का सम्बन्ध है वह तो हर एक दल में है। प्रत्येक दल को संकुचित संकीर्ण दलगत हितों को त्याग कर देश में एकता बनाये रखने का प्रयत्न करना चाहिये और कोई भी ऐसी बात नहीं करनी चाहिये जिससे भारत के किसी भी नागरिक में असुरक्षा की भावना पैदा हो। हमने देखा है कि देश के आजाद होने से पहले देश की स्वतंत्रता के लिये तथा स्वतंत्रता के बाद सीमाओं पर हुई लड़ाई के समय हमारा सारा देश एकता सूत्र में बंधा हुआ था। परन्तु इससे राज्यों और लोगों के आपसी झगड़ों का हल नहीं होता है। इसलिये हमें हिंसात्मक और उपद्रवी कार्यवाहियों की पूरे जोर से निन्दा करनी चाहिये। इसके लिये हमें देश के सभी दलों के सहयोग की आवश्यकता है। उनके सहयोग से हम सभी भारतीयों के लिये स्वतंत्रता से रहने की व्यवस्था कर सकते है। सरकार सभी समस्याओं को अकेली दूर नहीं कर सकती है। उन्हें हल करने के लिये उसे अन्य दलों के सहयोग की आवश्यकता है। जब कभी राज्यों के आपसी झगड़े उत्पन्न हो जायें तो उनके हल करने के लिये एक कसौटी निर्धारित की जानी चाहिये जिसके आधार पर उन्हें दूर किया जा सके। इसलिये मेरा निवेदन यह है कि जिन माननीय सदस्यों ने अविश्वास का प्रस्ताव पेश किया है उन्हें उसे वापिस ले लेना चाहिये और मिलकर देश की सभी राष्ट्रीय समस्याओं को हल करने का प्रयत्न करना चाहिये।

श्री पी० राममूर्ति (मदुरै) : कांग्रेस दल के सदस्यों तथा सरकार की ओर से भाषण सुनने से मैं यह समझ पाया हूं कि जो-जो विशेष प्रश्न उठाये गये थे, उनका जवाब नहीं दिया गया है।

सबसे पहले मैं शिव सेना का प्रश्न लेता हूं। श्री शान्ति लाल शाह ने अपने भाषण में कहा था कि कांग्रेस ने चुनावों में शिव सेना की सहायता नहीं ली थी। परन्तु इसके साथ ही साथ श्री चह्वाण ने इस बात का खण्डन कर दिया है। इसलिये मैं इस बारे में कोई तर्क नहीं प्रस्तुत करना चाहता।

जहां तक चुनावों का सम्बन्ध है श्री चह्वाण ने कहा है कि शिव सेवा ने कांग्रेस समेत सभी राजनीतिक दलों के अल्हड़पन का फायदा उठाया है। यह अल्हड़पन क्या है, यह बात मेरी समझ में नहीं आती। कांग्रेस को इस बात का पता था कि शिव सेना समाज-विरोधी भावनायें पैदा कर रही थी। वह नरेशों के घरों को आग लगा रहे थे और उन्हें लूट रहे थे। परन्तु वे लोग चाहते थे कि ये चीजें चलती रहें और हमें चुनावों में सहायता मिले। ऐसा उनका विचार था। यही कारण है कि उन्होंने इस बारे में उत्तर नहीं दिया है। तथापि मैं इसके विस्तार में नहीं जाना चाहता। श्री शान्ति लाल शाह ने आगे यह भी कहा था कि साम्यवादी दल उतना ही बुरा है जितना कि शिव सेना है। मान लीजिये यह बात सही है। परन्तु मैं यह जानना चाहता हूं कि जब शिव सेना लूटमार कर रही थी, तब सरकार ने क्या किया था। मैं यह भी पूछना चाहता हूं कि जब सारे साम्यवादी दल को कारावास में भेज दिया गया था, तब इस सरकार ने क्या किया था। अतः मैं जानना चाहता हूं कि साम्यवादी दल का शिव सेना के साथ कैसे मुकाबला किया जा रहा है।